उपसंहार

हिन्दी उपन्यास साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उपन्यास - खासकर समकालीन उपन्यासों की प्रवृति बदल रही है । उसमें समकालीन जीवन की वास्तविकताओं का बहुआयामी संदर्भ समाहित हो रहा है । भारतीय समाज विभिन्न धर्मों, जातियों एवं समुदायों का सम्मिश्रण है । हिन्दी की समकालीन उपन्यासकारों में हमारे समाज के विभिन्न वर्गों के उपन्यासकार है जिन्होंने अपनी अनुभूति अपने उपन्यासों के माध्यम से व्यक्त किया है । अतः इस क्षेत्र में व्यापकता लाने के लिए समकालीन साहित्य का अनुशीलन अपेक्षित है ।

'हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का अनुशीलन' विषय का अनुशीलन करने पर बहुत सारे तथ्य उभरकर सामने आये हैं, जिसे निष्कर्ष के रूप में यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है ।

हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों में केवल दो उपन्यासकार मेहरुन्निसा परवेज और नासिरा शर्मा की ही उपलब्धता है । हिन्दी की समकालीन उपन्यास विधा में दोनों ही उपन्यासकारों का योगदान मौलिक एवं विशिष्ट है । अपने जीवन के अनुभवों एवं सर्जनात्मकता से दोनों ही उपन्यासकारों ने साहित्य जगत को समृद्ध कर, उपन्यासों के माध्यम से समाज के गुण-दोषों एवं उसके विभिन्न आयामों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है । इस शोध-प्रबंध के आरंभ में समकालीन उपन्यासों का स्वरूप, परिभाषा, तत्व एवं उसके प्रवृतियों पर चर्चा की गई है । इसी क्रम में हिन्दी की समकालीन

मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के जीवनी पर भी प्रकाश डाला गया है, जिससे निष्कर्ष निकलता है कि ये अपने जीवन में कठिन संघर्ष कर कड़ी मेहनत और अथक प्रयास के बाद ही समकालीन उपन्यास विधा में एक विशिष्ट पहचान बनाने में सक्षम हुई हैं । शोध प्रबंध में आगे बढ़ते हुए हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के सभी उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है । इसी क्रम में उन सभी उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं को खोजा गया है, जैसे - बदलते पारिवारिक संबंध, रुढ़िगत मान्यताओं का खंडन, पुरानी और नई पीढ़ी के विचारों में अन्तर आदि । अध्ययन के पश्चात यह भी पाया गया कि हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में स्त्री के विविध रूपों यथा - बेटी, बहन, पत्नी, बहू, माँ, सास आदि का वर्णन है । उन्होंने विशेष रूप से मुस्लिम समाज की ग्रामीण एवं शहरी कामकाजी एवं घरेलू महिलाओं की समस्याओं को अपने उपन्यासों के माध्यम से वर्णित किया है । स्त्रियों में व्याप्त मानवीय संवेदनाओं एवं उसके सर्जनात्मक गुणों को भी इन उपन्यासकारों ने सूक्ष्मता से उजागर किया है । स्त्रियों ने समाज में फैले अनेक कुरीतियों और अंधविश्वासों के विरुद्ध आवाज उठाई है । फलतः कई बार उन्हें अनेक प्रताड़नाओं का शिकार होना पड़ा है, फिर भी वह संघर्ष करते हुए आगे बढ़ती हैं । स्त्रियों के प्रति पुरुषों के कुत्सित विचार यथा - स्त्रियों का दमन, भोगवादी प्रवृति आदि को भी इन उपन्यासकारों ने मर्मस्पर्शी शब्दों में व्यक्त किया है । इन उपन्यासों के अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि स्त्रियों को प्रगतिशील दृष्टिकोण रखते हुए अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों एवं शोषण के विरुद्ध आवाज उठाना चाहिए ताकि उनका अस्तित्व बरकरार रह सके । आधुनिक संदर्भ में पुरुष समाज को भी स्त्रियों के प्रति सम्मान की भावना रखना चाहिए ताकि एक स्वस्थ परिवार एवं समाज की कल्पना साकार हो

सके । इसी प्रकार हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में आर्थिक-पक्षों का भी आकलन किया गया है, जिसमें पाया गया है कि उपन्यासकारों ने लोगों की महात्वाकांक्षाओं, परिवार की आर्थिक स्थिति, बढ़ती बेरोजगारी, मंहगाई एवं उससे निजात पाने के लिए लोगों द्वारा किये जाने वाले संघर्षों का यथार्थ चित्रण किया है । उपन्यासकारों द्वारा भौतिक वस्तुओं की चकाचौंध से भ्रमित एवं दिशाहीन होती युवा पीढ़ी, शहरों एवं विदेशों की ओर उसका पलायन आदि जैसी समस्याओं का भी भली-भाँति चित्रण किया गया है । इसी क्रम में आगे बढ़ते हुए हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में धार्मिक एवं सांस्कृतिक-पक्षों पर भी प्रकाश डाला गया है, जिसमें पाया गया है कि इन उपन्यासों में धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से काफी समानतायें है, चाहे वह आध्यात्मिकता के नाम पर पाखंड की प्रधानता हो या स्वार्थ का बोलबाला, उपभोक्तावादी समाज में चाहे शादी के समारोह का वर्णन हो या सामाजिक प्रथा के नाम पर किसी समारोह का आयोजन । इन उपन्यासों के अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि धार्मिक उन्माद एवं पाखंड मानवता का सबसे बड़ा शत्रु है । धार्मिक उन्माद फैलाने वाले समाज के कुछ निहित स्वार्थी तत्व ऐसे निर्दोष और निरपराध लोगों की हत्या करवा देते हैं जो समाज में सांप्रदायिक सद्भाव एवं उसकी एकता के हिमायती होते हैं एवं ऐसी हत्याओं को एक सुनियोजित षड्यंत्र के तहत दुर्घटना का रूप दे दिया जाता है । शादी-ब्याह में मनुष्य की उपभोक्तावादी प्रवृति उभर कर सामने आती है । यहाँ धन का अपव्यय शान का प्रतीक समझा जाता है । तरह-तरह के दिखावे में संसाधनों का दोहन किया जाता है । एक ओर जहाँ मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यास 'कोरजा' एवं 'समरांगण' में प्रचुरता से धन के अपव्यय को दर्शाया गया है तो वहीं नासिरा शर्मा के उपन्यासों में 'जिन्दा मुहावरे', 'कागज की

नाव', 'कुइंयाजान' आदि उपन्यासों में दहेज एवं दिखावे में धन के अपव्यय को प्रमुखता दी गई है । 'जिन्दा मुहावरे' के मुख्य पात्र निजाम के दौलतमंद होने एवं पाकिस्तान की राजनीति में पैठ होने तक उपभोक्तावादी मनोवृति का परिचय मिलता है । इसी प्रकार हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में राजनीतिक-पक्षों पर भी प्रकाश डाला गया है, जिसमें पाया गया है कि पात्रों एवं परिवेश में अन्तर होने के बावजूद भी काफी समानता है, जैसे - स्वाधीनता के लिए लोगों की भावना एवं विद्रोह, देश विभाजन के समय राजनीतिक सोच, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद साम्प्रदायिकता फैलाने की घृणित सोच एवं उसका राजनीतिक लाभ आदि । 'समरांगण' उपन्यास में पंडित गोपीलाल के राजनीतिक स्वार्थपरता स्वाधीनता संग्राम में मुखरित हुई है । वह धोखा देने के मकसद से ही कांग्रेस में शामिल हुआ था । 'जिन्दा मुहावरे' में राजनीतिक फायदे के लिए देश विभाजन की समस्या को प्रमुख आधार बनाया गया है । यह राजनीतिक दलों के स्वार्थपरता के कारण हुआ एक धार्मिक बँटवारा था जिसमें स्वार्थी तत्वों का बोलबाला था । इसी प्रकार इन उपन्यासों में जहाँ एक ओर अपराध जगत का चित्रण मिलता है जिसमें पुलिस, वकील एवं राजनेताओं का भ्रष्ट गठजोड़ है तो वहीं दूसरी ओर अंधविश्वास एवं जादू-टोना के नाम पर सामान्य लोगों का शोषण । 'अक्षयवट' उपन्यास में भारत की प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था में पुलिस, वकील एवं राजनेताओं का असली स्वरूप सामने आया है । अपराधियों के बगैर राजनेताओं का अस्तित्व संकट में है । जब नीति-निर्धारक ही अपराधियों के हाथों की कठपुतली हैं तो फिर राज्य की व्यवस्था के क्या कहने ! अपराध का बोलबाला एवं अपराधियों के बढ़ते मनोबल का इसमें सूक्ष्मतापूर्वक वर्णन है । 'सात नदियां : एक समंदर' उपन्यास का पात्र अब्बास, जो एक इस्लामिक कोर्ट का न्यायाधीश है, के कथन से यह

स्पष्ट होता है कि कानून आम जनता के लिए होता है । जिस गुनाह के लिए आम जनता को फाँसी दे दी जाती है, वही गुनाह हुक्मरान बेहिचक करते हैं । 'कागज की नाव' में अंधविश्वास ने धर्म के अंतर को विलुप्त करने का कार्य किया है ।जहाँ धर्मान्धता के कारण लोग एक दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं तो वहीं अंधविश्वास की गहरी जड़ों ने इस दिवार को गिरा दिया है । ग्रह-नक्षत्रों की शांति के लिए मुस्लिम महिलायें हिंदू ज्योतिषियों को स्वीकार करती नजर आती हैं तो वहीं दूसरी ओर हिन्दू महिलायें अपने मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु पीर-फकीर, मुल्ला, नजूमी, आलिम एवं मौलवियों के पीछे चक्कर लगाती है ।

भाषा लोगों के विचार-विनिमय का एक महत्वपूर्ण माध्यम है जिससे हम अपनी संवेदनाओं को दूसरों तक पहुँचा सकते है । हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि उनके उपन्यासों की भाषा पात्रों के अनुरुप है । पात्रों के परिवेश और वातावरण के अनुरुप भाषा का चयन किया गया है ।भाषा सरल, सटीक एवं ओजपूर्ण है । शब्दों एवं वाक्यों के उचित प्रयोग से सभी पात्र सजीव हो उठे है ।मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में पात्रों के द्वारा हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू एवं हल्बी भाषा के शब्दों के प्रयोग को प्रमुखता दी गई है तो वहीं दूसरी ओर नासिरा शर्मा के उपन्यासों के पात्र शब्दों के चयन में बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं । नासिरा शर्मा की भाषाई पकड़ उनके उपन्यास के पात्रों के द्वारा मुखरित हो उठी है । उनके उपन्यासों के पात्र हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, अवधी, भोजपुरी आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग करते हैं । उपन्यासों में प्रचलित सभी शैलियों, यथा- विवरणात्मक-शैली, विश्लेषणात्मक-शैली, यथार्थ-शैली आदि का परिवेश के अनुसार प्रयोग किया गया है ।

यद्यपि हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का कथा परिवेश भिन्न - भिन्न है, किन्तु उनके उपन्यासों में वर्णित सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक समस्यायें एक जैसी है । भावात्मक रूप से भी इन उपन्यासों में समानता परिलक्षित होती है ।

*****